

● पढ़ो, समझो और लिखो :



४. बालिका दिवस



(सब बच्चे दूर्वा के घर खेलने के लिए एकत्रित हुए हैं। वहाँ चाची जी और बड़े भैया भी हैं।)

- दूर्वा** - सृष्टि, आज तो तुम बहुत बन-ठनकर आई हो।
- सृष्टि** - आज तीन जनवरी बालिका दिवस है ना !
- प्राची** - अरे हाँ ! कल बहन जी ने बताया था कि सावित्रीबाई फुले का जन्मदिन 'बालिका दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- चाची जी** - सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम शिक्षिका मानी जाती हैं। अपने पति महात्मा जोतीबा फुले के साथ मिलकर उन्होंने लड़कियों के लिए पुणे में पहली पाठशाला शुरू की थी।
- जिज्ञान** - आजकल तो लगभग सभी लड़कियाँ पाठशाला जाती हैं। पढ़ाई-लिखाई और अन्य क्षेत्रों में खूब आगे हैं।
- मंत्र** - हाँ-हाँ, आज समाजसेवा, शिक्षा, विज्ञान, संगीत, प्रशासन, शोधकार्य, खेलकूद आदि हर क्षेत्र में लड़कियाँ आगे बढ़ रही हैं।
- सृष्टि** - मेरी माँ बताती हैं कि शिक्षा हमें स्वावलम्बी और सजग बनाती है।
- भैया** - कहा जाता है, एक लड़की शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है।
- प्राची** - हाँ ! इसलिए हम सबको खूब मन लगाकर पढ़ना चाहिए।
- सभी** - खूब पढ़ेंगे-खूब बढ़ेंगे।



- उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ पाठ का वाचन करें। विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ। मुखर और मौन वाचन हेतु प्रेरित करें। उन्हें अपने पड़ोस के परिवार के सदस्यों की जानकारी देने के लिए कहें। पड़ोसियों के महत्त्व बताएँ।